श्रद्धा
(मासिक)
आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान, केलवा
जिला राजसमन्द, राजस्थान

अंक 87 | मई-जून 2021 | साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा शृंखला -3 | वैशाख-ज्येष्ठ 2077

साध्वी प्रमुखा का आंतरिक व्यक्तित्व

व्यक्तित्त्व दो तरह का होता है-एक बाह्य व्यक्तित्त्व और दूसरा आंतरिक व्यक्तित्त्व। बाह्य व्यक्तित्त्व आंतरिक गुणों को प्रतिबिम्बित करता है। आंतरिक गुण कर्म को माध्यम बनाकर बाह्य व्यक्तित्त्व को प्रभावी एवं आकर्षक बनाते हैं। साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा का व्यक्तित्व आंतरिक गुणों से सराबोर है।

बालिका कलाकुमारी अपने परिवार में बाल्यकाल से ही शान्त प्रकृति की थी। उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति में सहजता तथा अन्तर्मुखता की झलक प्रतिबिम्बित होती थी। ऐसी पावन स्थिति में वैराग्य की लता क्रमशः विकसित होती गई। दीक्षा लेने का दृढ़ संकल्प कर लिया। साध्वियों के साथ रह कर तत्वज्ञान प्राप्त किया किन्तु दीक्षा लेने की बात परिवार में किसी को नहीं बता सकी।

उनमें एकाग्रता, नियमितता, पापभीरूता, दृढ़ संकल्प, अथक परिश्रम आदि ऐसी विशेषताएं थी जो प्रतिक्षण उनमें नवीन निखार का प्रस्फुटन कर रही थी। दीक्षा के पश्चात् तेरापंथ धर्मसंघ में प्रचलित शिक्षा में पाठ्यक्रम (समकक्ष एम.ए.) में उन्होंने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनकी विनम्रता, व्यवहार कुशलता और अनुशासनप्रियता की तत्कालीन साध्वी समाज पर अनूठी छाप अंकित होने लगी। आचार्य तुलसी ने अपनी पारदर्शी दृष्टि से अवलोकन करते हुए कहा कि ‘‘जब से मैंने देखा है, तब से सहज भाव से उन्हें विनम्र पाया है। उनका समर्पण अलौकिक है। सत्यनिष्ठा और पापभीरूता इन्हें प्रकृति से प्राप्त है। अभिमान इन्हें छू तक नहीं गया है। इनकी पाचन क्षमता उल्लेखनीय है। इन और ऐसी बातों को अनुभव कर आचार्य तुलसी ने इन्हें कम उम्र में ही साध्वीप्रमुखा बनाया।

आगे चलकर साध्वीप्रमुखा की कार्यक्षमता और साध्वी समाज के प्रति इनके समर्पण का आकलन करते हुए साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को ”महाश्रमणी” के अलंकरण से अलंकृत किया। साध्वीप्रमुखा के आंतरिक व्यक्तित्त्व से प्रभावित होकर एक बार जब वे साध्वी समाज के साथ आचार्यप्रवर से विदा होने लगी, तब आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यश्री ने खड़े होकर तथा कुछ कदम चल कर उन्हें द्वार तक पहुंचाया। यह तेरापंथ धर्मसंघ में प्रथम अवसर था, जब आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री दोनों ने उन्हें द्वार तक पहुंचाने का अनुग्रह किया हो।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जब अपने प्रवास से लौटकर आई और प्रवास के दौरान प्रेक्षाध्यान आदि के प्रचार-प्रसार के लिये उन्होंने जो श्रम किया, साध्वीप्रमुखा द्वारा गुरुदेव के दर्शन करने पर युवाचार्य महाप्रज्ञ ने कहा-‘‘साध्वीप्रमुखा ने श्रम किया, सही दिशा में किया और पूरे विवेक के साथ किया। प्रेक्षा यात्रा की सफलता उनके आंतरिक व्यक्तित्त्व की करामात है। पैरों में छाले पड़ गये, फिर भी वे रुकी नहीं, यह उनके श्रम को प्रतिष्ठा देने वाली बात है। युवाचार्य के उपर्युक्त अभिव्यक्ति के पश्चात् परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में उनके आंतरिक व्यक्तित्त्व को उद्घाटित करते हुए, फरमाया-साध्वीप्रमुखा ने कल्पना से अधिक श्रम किया है।”

वस्तुतः साध्वीप्रमुखा अपने यात्रा प्रवास में जहां कहीं भी जाती है, वहां पूरी चहल-पहल मच जाती है। कहीं कोई दिखावा नहीं। उनके साहित्यिक लेखन में अभिव्यक्ति की जो सहजता है, वह उनके आंतरिक व्यक्तित्त्व को स्वयं उजागर करती है। आगमों के सम्पादन में उनकी कर्त्तव्यनिश्ठा समाज के लिये उत्कृष्ट उदाहरण है। संघ का कोई भी कार्य हो, साध्वीप्रमुखा की लगन, निश्ठा, समर्पण आदि उनके आंतरिक व्यक्तित्त्व को रूपायित करते हैं। वस्तुतः आपकी संघ एवं संघपति के प्रति गहरी निष्ठा, कार्यकुशलता, विवेक, बुद्धिवैभव, पुरूषार्थ, अप्रमतता, विनम्रता, गोपनीयता, निस्वार्थवृत्ति, सेवाभावना आदि उनके आंतरिक व्यक्तित्त्व को स्वयं उद्घाटित करती है। यही कारण है कि सम्पूर्ण धर्मसंघ और सध्वी समाज आपको सम्मान के साथ देखता है। उनके 50वें मनोनयन दिवस पर उनका भव्य और प्रतिष्ठित आंतरिक व्यक्तित्त्व और उसकी सौरभ तेरापंथ संघ की विशिष्ट पूंजी है।

- डॉ. देव कोठारी

नानी पालकीवाला

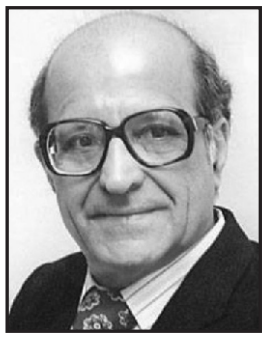

नानी पालकीवाला (1920–2002) एक प्रख्यात संवैधानिक और टैक्स एडवोकेट थे जिन्होंने स्वतंत्र भारत के संवैधानिक इतिहास में अपनी अपरिग्रही जीवन शैली और संवैधानिक निष्ठा की अमिट छाप छोड़ी। उनके वसीयतनामे की निम्न पंक्तियाँ उनकी अपरिग्रहवृत्ति का निदर्शन है- 'जब मेरा जीवन समाप्त हो जाएए मेरी नजर उस शख्श को दीजिये जिसने कभी सूर्योदय के दर्शन नहीं किये। मेरा दिल उसे दीजिये जिसने दिल के दर्द को महसूस किया हो। मेरा खून उस युवक को दीजिये जिसे गाड़ी के मलबे से निकाला हो जिससे वह अपने नाती-पोतों को खेलता देखने के लिये जी सके। मेरे गुर्दों को दूसरे के शरीर का जहर बाहर निकालने के उपयोग के लिये दे देना। मेरी हड्डियों का इस्तेमाल करना कि कोई अपंग बच्चा चल सके। मेरे शेष-अवशेष की राख को हवा में तितर-बितर कर छोड़ देना जिससे कि फूल खिलें।'

'यदि आपको कुछ दफनाना ही हो तो मेरे दोषों और लोगों के प्रति मेरे पूर्वाग्रहों को दफन होने देना। मेरे पापों को शैतान को सौंपना और मेरी आत्मा को ईश्वर को समर्पित करना। यदि आप मुझे याद करना चाहें तो, जिसे आपकी जरूरत हो ऐसे किसी जरूरतमंद के प्रति करुणामय शब्द और दयामय कार्य करके, याद करें। जो कुछ मैंने निवेदन किया है, यदि आप वैसा ही करते हैं तो मैं सदा-सदा के लिये जीवित रहूँगा।' नानी पालकीवाला का यह कितना उदात्त विचार था।

नानी पालकीवाला से संबंधित एक और घटना इस प्रकार है- उन्हें इन्दौर में टाटा कंपनी के अध्यक्ष के रूप में वार्षिक आम बैठक में भाग लेना था। बिड़ला समूह के एक चैरिटेबल ट्रस्ट का कोई कर मुकदमा मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में लगा था। कंपनी के अधिकारी उक्त केस को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में बहस के लिये नानी पालकीवाला से नियुक्ति और स्वीकृति पाने हेतु आतुर थे किन्तु पालकीवाला के पास उक्त प्रयोजन हेतु कोई खाली समय नहीं था। ब्रीफिंग वकील, जो इन्दौर के एक प्रख्यात वकील हैं, को उच्च न्यायालय में सुनवाई उसी दिन करवानी थी जिस तारीख को उक्त कंपनी की वार्षिक बैठक तय थी और जो नानी पालकीवाला की अध्यक्षता में आयोजित थी। नानी पालकीवाला वार्षिक आम बैठक से दोपहर भोजनावकाश तक निवृत्त हो गये और उनकी मुंबई वापसी उड़ान शाम को होनी थी।न्यायाधीश को भोजन-सत्र के बाद मामला लेने का अनुरोध किया गया जिस पर उन्होंने सहमति दे दी।

दोपहर भोजन के बाद ब्रीफिंग वकील के, नानी पालकीवाला द्वारा चैरिटेबल ट्रस्ट की रिट याचिका पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में बहस करने के, अनुरोध को स्वीकार करने पर, मौके पर ही काली-पोशाक की व्यवस्था की गई और मीटिंग स्थल से न्यायालय के रास्ते में करीबन आधे घण्टे में मुकदमें की ब्रीफिंग भी की। वकील समय पर न्यायालय पहुँचे और नानी पालकीवाला ने न केवल मामले की वाक्पटुता और गहनता से वकालत की, अपितु कंपनी को जीत हासिल हुई। पालकीवाला अपनी पूर्व निर्धारित उड़ान से मुंबई रवाना हो गये।

जब नानी पालकीवाला को एक खाली चैक की पेशकश करते हुए पेशेवर शुल्क के लिये अपना बिल भेजने का अनुरोध किया गया तो पालकीवाला ने चैरिटेबल ट्रस्ट से पेशेवर शुल्क लेने से इनकार करते हुए कंपनी से अनुरोध किया कि वह राशि को धर्मार्थ प्रयोजन हेतु दान दे दें। ऐसा था एक उच्चतम कर-वकील नानी पालकीवाला का मानवीय, निःस्वार्थ और अपरिग्रही दृष्टिकोण।

नानी पालकीवाला ने हमारे देश में अनेक वर्षों तक टैक्स के वकीलों की टीम का नेतृत्व किया। उनको कर-कानूनों का गहन ज्ञान था तथा उन्हें वकृत्व की गहन प्रतिभा हासिल थी, जिसका उपयोग वे अपनी अकाट्य बहस में भी किया करते थे। अब यह इतिहास के पृष्ठों में है और कर के संबंध में उनके विचारों को उनके द्वारा आयकर कानूनों पर लिखी प्रसिद्ध टीकाओं/व्याख्याओं में पढ़ा जा सकता है। ये पुस्तकें प्रायः सभी कर वकीलों के पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं।

देश के उद्योगपतियों, व्यापारियों और सभी नागरिकों, जो धनार्जन करते हैं, से अपेक्षा की जाती है कि वे ईमानदारी और सही रूप से कर भुगतान करें जिससे महावीर द्वारा 2600 वर्ष पूर्व प्रतिपादित सिद्धांत अपरिग्रह अुणव्रत के पालन से दुःख मुक्ति का द्वार अनावृत्त हो सके। महावीर ने स्पष्ट कहा कि अपरिग्रह के बिना अहिंसा का पालन संभव नहीं है।

नानी पालकीवाला ने वर्षों तक अपने कर कानून के गहन ज्ञान, वाग्मिता और कल्पनाशील तर्क और गहन दृष्टि से एक बड़ी संख्या के वकीलों की टीम का नेतृत्व किया। कर का क्या अर्थ है इसे आपकी प्रसिद्ध पुस्तक 'Commentary on Income-Tax-Laws' के द्वारा पढ़कर, इससे नानी पालकीवाला के दृष्टिकोण और ऐतिहासिक महत्त्व को समझा जा सकता है। देश के प्रायः सभी कर-वकीलों के पुस्तकालय में इस पुस्तक की मौजूदगी और उपयोगिता आज भी आपकी कीर्तिपताका लहरा रही है। कर तथा संवैधानिक कानून के विशेषज्ञ वकील नानी पालकीवाला एक महान व्यक्ति थे जिन्होंने कई उपाख्यानों और कहानियों के माध्यम से अपनी पुस्तकों जैसे 'We the Nation', 'We the People' और 'Our Constitution Defiled' आदि में अपरिग्रह-दर्शन के ऐसे उदाहरणों को प्रस्तुत किया है जिनको उन्होंने स्वयं जिया और हमें जीवन के उन नजरियों से लाभान्वित होने का पथ प्रदर्शन किया।

नानी पालकीवाला का जीवन परोपकार करने की महती प्रेरणा देता है जो कि उनके जैसे अपरिग्रही और निःस्वार्थ जीवन जीने पर संभव है। उनकी दृष्टि में जो कुछ हमारे पास है-संपत्ति और संसाधन, वस्तु, विद्या, विवेक, विचार सभी कुछ विसर्जन से ही मुक्तिदायक बनते हैं। अपनी जरूरत से अधिक चीजों की इच्छा और उनका संग्रह परिग्रह है, जिसे जरूरतमंद में बाँटकर ही सार्थक जीवन जीया जा सकता है। न्यूनतम में रहने और लालच मिटाने के लिये अधिकाधिक दूसरों को देने के संवाहक नानी पालकीवाला ने अपने तन तक को देशवासियों की जरूरत के लिये समर्पित कर अपरिग्रही जीवन का एक अद्‌भुत आदर्श प्रस्तुत किया।

- Dr. Justice Vineet Kothari

हिन्दी रूपान्तरः डॉ. सुषमा सिंघवी

श्री करेडा पार्श्वनाथ तीर्थ

राजस्थान का लगभग 2000 वर्षों से भी अधिक प्राचीन जैन तीर्थ जिसका उल्लेख 1000 वर्ष प्राचीन जैन ग्रंथों एवं यहां एक स्तंभ पर अंकित 55, शिलालेख के अनुसार यह ज्ञात होता है कि यह तीर्थ विक्रम युग से भी पहले स्थापित था।

यहां पर प्रभु श्री "करेडा पार्श्वनाथ जी" की श्याम वर्ण, 90 सेमी ऊंचाई की, पदमासन मुद्रा में, 9 फणों से सुशोभित प्रतिमा जी प्रतिष्ठित है। प्रतिमा जी पर सर्प का विशेष लांछन है जो कि बड़ा एवं अलग से उकेरा गया है जो कि अत्यंत दुर्लभ है। प्रतिमा जी बहुत सुंदर और मनमोहक है अपने चमत्कार, प्राचीनता, शांत और ठंडे वातावरण के साथ यह तीर्थ सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

इतिहास के अनुसार विक्रम संवत ८६ में श्री खेमसिंह जी शाह के द्वारा एक विशाल एवं सुन्दर 52 जिनालय का यहां निर्माण करवाया एवं प्रभु श्री करेडा पार्श्वनाथ जी की पावन प्रतिमा जी के सहित कई छोटी, बड़ी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करवाई गई थी। जिसके बाद विक्रम संवत 1039 में प.पू.आचार्य श्री यशोभद्रसुरिश्वर जी महाराज साहब के मार्गदर्शन एवं निश्रा में इस पावन तीर्थ का जीर्णोद्धार करके इस पावन प्रतिमा जी को प्रतिष्ठित किया गया था। एक समय जब प. पू.आचार्य श्री धर्मघोष सूरीश्वर जी मा.सा. शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा और इस तीर्थ में ठहराव के दौरान इस तीर्थ का नवीनीकरण करवाया गया एवं कहा जाता है कि सेठ श्री झांझन जी शाह ने एक 7 मंजिला मंदिर का निर्माण करवाया हालांकि वर्तमान में यह मौजूद नहीं है, लेकिन मंदिर जी की कुछ पावन प्रतिमाओं पर विक्रम संवत 1303, 1341 और 1496 का उल्लेख आज भी मौजूद है। विक्रम संवत 1656 में इस तीर्थ का पुनः जीर्णोद्धार करवाया गया, विक्रम संवत 2033 में प.पू.आचार्य श्री सुशील सूरीश्वर जी मा.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन में इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया गया है जिसके 44 वर्ष पूर्ण होने और 45 वर्ष प्रवेश के शुभ अवसर पर प.पू.श्री निपुण रत्न सूरीश्वर जी मा.सा. की निश्रा में भव्य आयोजन के साथ संपन्न हुआ जिसमें मुझे भी सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

इस पावन तीर्थ का उल्लेख कई जैन ग्रंथों में भी है। यह तीर्थ 108 पार्श्वनाथ जी की श्रंखला में भी सम्मिलित हैं। उदयपुर - चितौड़गढ़ के मध्य यह तीर्थ प्रतिष्ठित है जो कि उदयपुर से लगभग 55 किमी की दूरी पर स्थित है। यहां आधुनिक धर्मशालाएं, भोजनशाला एवं छोटे - बड़े हहल की सुविधाएं उपलब्ध है। इस तीर्थ पर समय के अनुसार मेले, वर्षीतप जैसे धार्मिक आयोजन होते है। एक बार कोरोना से मुक्ति पश्चात इस पावन तीर्थ की सपरिवार और अपनों के संग तीर्थ यात्रा अवश्य करें।

एक श्लोक की गहन व्याख्या

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देवदेव ।।

"संस्कृत का यह श्लोक सर्वज्ञात है। इसका अर्थ है- हे भगवान! तुम्हीं माता हो, तुम्हीं पिता, तुम्हीं बंधु, तुम्हीं सखा हो। तुम्हीं विद्या हो, तुम्हीं द्रव्य, तुम्हीं सब कुछ हो। तुम ही मेरे देवता हो"

यह सुंदर और प्रेरक प्रार्थना है उसका ''वरीयता क्रम'' समझिए तो! सबसे पहले माता क्योंकि वह है तो फिर संसार में किसी की जरूरत ही नहीं। इसलिए हे प्रभु! तुम माता हो ! फिर पिता, अतः हे ईश्वर ! तुम पिता हो ! दोनों नहीं हैं तो फिर भाई ही काम आएंगे । इसलिए तीसरे क्रम पर भगवान से भाई का रिश्ता जोड़ा है। जिसकी न माता रही, न पिता, न भाई तब सखा काम आ सकते हैं, अतः सखा त्वमेव!

वे भी नहीं तो आपकी विद्या ही काम आती है। यदि जीवन के संघर्ष में नियति ने आपको निपट अकेला छोड़ दिया है, तब आपका ज्ञान ही आपका भगवान बन सकेगा। यही इसका संकेत है, और सबसे अंत में ''द्रविणं'' अर्थात धन। जब कोई पास न हो तब हे देवता तुम्हीं धन हो। रह-रहकर सोचता हूं कि प्रार्थनाकार ने वरीयता क्रम में जिस धन-द्रविणं को सबसे पीछे रखा है, वहीं धन आजकल हमारे आचरण में सबसे ऊपर क्यों आ गया है? धन कीमती है, पर उससे ज्यादा कीमती माता, पिता, भाई,मित्र, विद्या हैं। उससे बहुत ऊँचे आपके अपने। बार-बार ख्याल आता है, द्रविणं सबसे पीछे बाकी रिश्ते ऊपर। बाकी लगातार ऊपर से ऊपर, धन क्रमशः नीचे से नीचे!

याद रखिये दुनिया में झगड़ा रोटी का नहीं, थाली का है! वरना वह रोटी तो सबको देता ही है! यदि कभी हमारे वरीयता क्रम को पलटने लगे तो हमें इस प्रार्थना को जरूर याद कर लेना चाहिये

प्रस्तुतिः प्रकाश तातेड़

विज्ञान

फिजियोथेरेपी एवं स्वास्थ्य

फिजियोथेरेपी चिकित्सा की एक सहायक शाखा है जिससे विविध रोगों की चिकित्सा की जा सकती है तथा शरीर की क्षमता दक्षता और लचक को भी बनाए रख सकते हैं। अनेक अस्थिरोगों, दुर्घटनाओं, पक्षाघात और मनोरोगों की औषधि- चिकित्सा के साथ चिकित्सक के परामर्श से एक फिजियोथेरेपिस्ट की सेवाएं लेकर मांस पेशियों, जोड़ों आदि को सक्रिय बनाकर रोगी को सामान्य अवस्था में लाकर पुनः स्वावलंबी बनाया जा सकता है। उष्मा, जल, विद्युत ध्वनि, मालिश, अंग-संचालन आदि वैज्ञानिक उपयोग से रोगी की शारीरिक एवं मानसिक दशा में एक कुशल फिजियोथेरेपिस्ट वांछित सुधार ला सकता है।

कैंसर, गठिया, जरावस्था, स्नायुतंत्र-विकार, स्त्रीरोग, अस्थिरोग तथा दुर्घटनाओं, खेलकूद की चोटों, शिशुरोग समस्याओं आदि में फिजियोथेरेपी द्वारा निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकते हैं-

1. रोगी की सक्रियता में सुधार
2. मांसपेशियों में लोच बनाए रखना
3. रक्त परिभ्रमण का अच्छा स्तर
4. रक्त के थक्के बनने को रोकना
5. अस्थि घनत्व का अच्छा स्तर
6. हृदय एवं फेफड़ों की क्रियाशीलता
7. मनोवैज्ञानिक स्थिरता, कोर्टिको स्टेरोइड्स तथा थक्का रोकनेवाली दवाओं से पाचन तंत्र (GIT) में अल्सर होना और उनसे रक्त बहने की प्रवृत्ति को भी तेज शारीरिक गतिविधियों या फिजियोथेरेपी से नियंत्रित कर सकते हैं।

इसके साथ ही तेजगति से भ्रमण, योगासन, प्राणायाम आदि से अनेक रोगों से बचा जा सकता है। शिथिलता और आलस्य रोगों की जड़ हैं तो फिजियोथेरेपी, सक्रिय जीवन और प्रातः भ्रमण हमें वजन बढ़ने से, श्वास रोगों से, सरदर्द, तनाव, हृदय रोगों, अनिद्रा ऑस्टियोपोरेसिस आदि से बचाते हैं और मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ और ऊर्जावान बनाते हैं।

- डॉ. सुजान सिंह

संस्था समाचार

संस्थान के दानवीर सदस्य तनसुसख जी बोहरा ने केलवा स्थित चिकित्सालय भवन बनाया साथ ही उसमें 30 बेड, 10 व्हील चेयर एवं विभिन्न उपकरण दिये। जिले के अन्य चिकित्सालयों में बेड आदि कोरोना काल में भेंट किये गये। दो माह तक केलवा चिकित्सालय में अल्पाहार की व्यवस्था की गई। आर के हॉस्पीटल राजसमन्द, कमला नेहरु हॉस्पीटल कांकरोली, राजकीय चिकित्सालय रेलमगरा, गिलूंड, कुंवारिया को 12 व्हील चेयर्स भेंट की। कोरोना काल में मेवाड़ सहायता समिति को 25 हजार रुपये एवं गोशाला में 11 हजार रुपये का सहयोग दिया गया। संस्थान उनकी परोपकार की भावना का अभिनन्दन करता है।

सादर श्रद्धांजलि

संस्था के सह संस्थापक डॉ. यशवन्त कोठारी का कोरोना संक्रमित होने एवं लम्बे उपचार के बाद दिनांक 18 मई 2021 को आकस्मिक देहावसान होना संस्था के लिए अपूरणीय क्षति है। डॉ. कोठारी समाज सेवा में तन मन धन से आजीवन समर्पित रहे उनका विनम्र कर्मयोगी, बहुआयामी व्यक्तित्व अनुकरणीय एवं प्रेरणास्प्रद है। संस्थान द्वारा हार्दिक श्रद्धांजलि।

विगत महीनों में संस्था एवं केलवा ग्राम से सम्बन्धित निम्नांकित शोक समाचार प्राप्त हुए :-

1) सदस्य अरविन्द कोठारी की माताश्री श्रीमती सायर देवी पत्नी श्री मूलचन्द जी कोठारी
2) कार्याध्यक्ष श्री डी.सी. कोठारी की भाभी जी श्रीमती सुन्दर देवी पत्नी श्री शंकर जी कोठारी
3) तेरापंथ समाज केलवा के अध्यक्ष श्री लवेश जी मादरेचा पुत्र श्री वरदी चन्द जी मादरेचा एवं उनकी पत्नी श्रीमती कीर्ती मादरेचा
4) तेरापंथ समाज के वरिष्ठ सदस्य श्रीमान् नाना लाल जी कोठारी पुत्र श्री गोटलाल जी कोठारी
5) युवक परिषद सदस्य श्री संदीप जी कोठारी पुत्र श्री गुणसागर जी कोठारी
6) तेरापंथ समाज सदस्य श्री सुरेश जी बोहरा पुत्र स्व. श्री चन्दनमल जी बोहरा
7) तेरापंथ श्राविका श्रीमती मीठू बाई पत्नी श्री पूनमचन्द जी कोठारी हम सबके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान, केलवा

स्थापना - 25 सितम्बर 2012 केलवा आजीवन सदस्यता - 11,000 रु. Email : sansthan456@yahoo.com
उद्देश्य - एक सबल संस्था की स्थापना और विकास जो आध्यात्मिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य संबंधी स्थाई गतिविधियां आयोजित करे। भिक्षु दर्शन, ज्ञान प्रसार एवं अनुसंधान का व्यापक कार्य करे।
अध्यक्ष - श्री महेन्द्र कोठारी आनन्द विला, न्यू कॉलोनी, कांकरोली मो. - 9829846860
कार्यकारी अध्यक्ष - श्री डी.सी. कोठारी, अम्बिका मार्बल, केलवा मो. 9166263709
सचिव - श्री दिनेश कोठारी भिक्षु विहार मार्ग, केलवा मो. - 9414174021

प्रकाशन सहयोग एवं पता

विज्ञान समिति
रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर
फोन : 0294-2413117, 2411650
E-mail : samitivigyan@gmail.com

समन्वयक- डॉ. कुन्दनलाल कोठारी (9461032422) सम्पादक - श्री प्रकाश तातेड़ (9351552651) कम्प्यूटर वर्क - श्री गजेन्द्र दाहिमा (9414736608)

सौजन्य : श्रीमती कमला देवी-डॉ. देव कोठारी 'वरद पूनम' 8-9, नवलोक कॉलोनी, नवरत्न कॉम्प्लेक्स, उदयपुर मो. : 941416319